Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

(13. D. 17.) Hindi gen. 36

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Bhāshā vyākaraṇa.

Bhakha Beakaran

भाषाव्याकरण

जिसको

अवध देशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों के
लिये श्रीत्रिपाठि केशवप्रसादशर्म्मा डिपुटी
इन्स्पेक्टर मदारिस ज़िले उन्नाम ने
कई ग्रन्थों से संग्रह किया।

श्रीमद्विद्या सम्पन्न साहब डैरेक्टर वीरेश आफ़ पब्लिक
इन्स्ट्रक्शन पश्चिमोत्तर व अवध देशीय की
अनुमति से

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा॥

मई सन् १८८२ ई०॥

भाषा व्याकरण ॥

पहिला पाठ ।

१—**भाषा** वह है जिस्के द्वारा लोग अपने मन की बात ज़ाहिर करते हैं ॥

२—शुद्ध लिखना पढ़ना किसी भाषा का बिना **व्याकरण** के नहीं आता ॥

व्याकरणके मुख्य तीन भाग हैं ॥

वर्णविचार, शब्दविचार, और **वाक्यरचना** ॥

३—हिन्दी भाषा जिन अक्षरों में लिखीजातीहै वह **देवनागरी** कहलाते हैं ॥

दूसरा पाठ ।

वर्ण विचार ॥

४—**वर्णविचार** में वर्णों का लक्षण, मेल, और उच्चारण स्थान बताया जाता है ॥

५—**वर्ण** वा **अक्षर** बुद्धिमानों के बनाये लिखने पढ़ने के लिये सङ्केत हैं ॥

वर्णों के दो भेद हैं—**स्वर** और **व्यञ्जन** ॥

६—**स्वर** वह हैं जो आपही बोले जायं जैसे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ ॥

स्वर तेरह हैं ॥

---

३ पाठ ।

स्वरों के भेद ॥

अ इ उ ऋ ऌ ये पांच **ह्रस्व** स्वर हैं ॥

ऋ ॠ ऌ ये तीन सिर्फ़ (संस्कृत) में आते हैं ॥

आ ई ऊ ॠ ये चार **दीर्घ** हैं ॥
ए ऐ ओ औ ये चार **संयुक्त** हैं ॥

७——ह्रस्व स्वर के बोलने में जो काल लगता है उसे **एकमात्रा** कहते हैं—दीर्घस्वर के बोलने में ह्रस्व से दूनाकाल लगता है और प्लुत के उच्चारण में तिगुना काल लगता है—जब किसी को दूर से पुकारते हैं तो वहां प्लुत बोला जाताहै—जैसे अय मथुरा ३ मथुरा रे ३ यहां मथुरा शब्द का पिछला **आ** और **र** का **ए** प्लुत हैं—पहचान के लिये ३ का अङ्क लिख देते हैं ॥

८——सब स्वर **सानुनासिक** और **निरनुनासिक** भेद से दो प्रकारके होतेहैं—जो स्वर केवल मुखसे बोलेजायं वह **निरनुनासिक** कहाते हैं जैसे अ इ उ ॥

और जो नाक और मुंह से बोले जायं वह **सानुनासिक** कहाते हैं जैसे अँ इँ ॥

९——स्वर के सिर पर जो ऐसा (ं) चिन्ह होता है और जिस्का उच्चारण नाक से हो उसे **अनुस्वार** कहते हैं जैसे अं इं ॥

१०——**विसर्ग** कंठ से बोला जाता है और वह स्वर के आगे (:) ऐसे दो विन्दु में लिखा जाता है जैसे अः ॥

११——जब स्वर व्यञ्जन के साथ मिलतेहैं तो उनके रूप बदलजाते हैं और उनको **मात्रा** कहते हैं ॥

जैसे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः
— ा ि ी ु ू ृ ॄ ॢ े ै ो ौ ं ः

४ पाठ ।

व्यञ्जन ॥

१२——व्यञ्जन वह वर्ण हैं जो विना स्वर की सहायता के बोले न जायं जैसे क् ख् ॥

व्यञ्जन का स्पष्ट उच्चारण स्वर के योग से होता है जैसे क ख ॥

किसी अक्षरके आगे कार जोड़नेसे वहअक्षर समझा जाताहै जैसे अकार ककार कहने से अ और क समझा जाता है ॥

१३——हल उस अक्षर को कहते हैं जिस्में स्वर नहीं रहता और उसका चिन्ह यह (्) है जो व्यञ्जन के नीचे लिखा जाता है॥

व्यञ्जन ३३ हैं और उनके नाम यह हैं॥

क	ख	ग	घ	ङ	कवर्ग
च	छ	ज	झ	ञ	चवर्ग
ट	ठ	ड	ढ	ण	टवर्ग
त	थ	द	ध	न	तवर्ग
प	फ	ब	भ	म	पवर्ग
य	र	ल	व		अन्तस्थ
श	ष	स	ह		ऊष्म

व्यञ्जन में मात्रा रूप स्वर मिलाने से व्यञ्जन का रूप मात्रा सहित होजाता है जैसे क का कि की कु कू कृ कॄ कॢ के कै को कौ कं कः

इसी तरह खआदि में जानो॥

---

५ पाठ।

वर्णोंके उच्चारण॥

कभी २ वर्णों के उच्चारण में भेद होता है —यथा—

ए	जैसे	ऐश्वर्य्य	में
ए	तथा	ऐब	में
ए	तथा	है	में
औ	तथा	औषधि	में
औ	तथा	रौज़ा दौरा	में
ड	तथा	डाह	में
ड़	तथा	कड़ा	में
ढ	तथा	ढेला	में
ढ़	तथा	गढ़ा	में

क से म तक वर्णों की स्पर्श संज्ञा है॥

ङ ञ ण ष केवल संस्कृत में आते हैं भाषा में नहीं आते॥

जो लोग संस्कृत नहीं जानते वह **ब** और **व** के उच्चारण में कुछ अन्तर नहीं करते—जैसे बल, बुध, बध जो बकारादि हैं—और वट वटु वन वधू जो वकारादि हैं कुछ अन्तर नहीं चाहे जैसे पढ़ें और लिखें ॥

य को जब संस्कृत शब्द के आदि में हो वा द्वित्व हो तो **ज** बोलतेहैं जैसे यव, यज्ञ, यथार्थ, यजमान, यमुना, योग्य और सूर्य्य को जब जज्ञ, जथार्थ, जजमान, जमुना, जोग्य और सूज्ज लिखते पढ़तेहैं—यहअशुद्ध है, जो शब्द जैसा हो वैसाही लिखना पढ़ना चाहिये ॥

मध्य और अन्त्य **र** का बदला कभी २ **ल** से होजाताहै यथा मुरहठी मुलहठी दारि दालि रार राल ॥

कभी **ड** के साथ भी बदला होता है जैसे पुरिया पुड़िया फोरा फोड़ा रोरा रोड़ा ॥

श को **स** बोलना अशुद्धहै जैसे यश को जस और आशा को आसा **शङ्क सङ्क** ऐसेही और जानों ॥

ष इसका उच्चारण ख वत् न करना चाहिये क्योंकि इसीका फल अब यह हुआ है कि लोग लिखते भी अशुद्ध हैं जैसे दोष दोख और **ख** की जगह **ष** लिखते हैं जैसे लिखना लिषना खाट षाट सुख सुष ॥

ङ ञ ण के स्थान में **न** बोलना और लिखना; और ऐसेही **च्छ** के स्थानपर **छ** लिखना पढ़ना बिल्कुल भूल है ॥

---

६ पाठ।

संयुक्त अक्षर ॥

दो वा तीन आदि अक्षरों के मेल को **संयोग** कहते हैं जैसे कच्चा कष्ट, कार्त्स्न्य ॥

पहिले व्यञ्जन में काना न होवे तो उसका आधा रूप लिखकर उस के नीचे वा कभी२ आगे जैसा द्+य=द्य, ड्+य=ड्य, और कानाहोवे तो गिरा कर उस वर्णके आगे दूसरा स्वर युक्त अक्षर पूरा लिखा जाता है—ड्+ग=ड्ग, ग्+म=ग्म, प्+र=प्र इत्यादि दूसरे वर्णमें स्वर न होवे तो उसका भी उसी रीति से आधा रूप लिखकर तीसरा स्वर युक्त वर्ण लिखते हैं जैसा त्+म्+य=त्म्य, ङ छ ट ठ ड ढ ये संयोग की आदिमें पूरे लिखे जाते हैं—जैसे ङ्क ट्र॥

क्ष त्र और ज्ञ को मूल व्यञ्जनों में पढ़ातेहैं पर ये संयुक्त हैं क्योंकि क् और ष मिलकर क्ष (त्+र=त्र) (ज्+ञ=ज्ञ)॥

जिस व्यञ्जन में काना नहीं है और र का योग करना है तो इस रूप (्र) से होगा जैसे ड्र ठ्र और काना वाले व्यञ्जन में ऐसे (्) जोड़तेहैं जैसा प्+र=प्र, क और श का योग होने से क और श का रूप बदल जाता है जैसा क्र श्र॥

जब र दूसरे अक्षर की आदिमें मिले तो उसके सिर पर (र्) ऐसा चिन्ह करतेहैं जैसे गर्व वर्ण सर्व और जिस पर रेफ होताहै वह बहुधा द्वित्व होता है॥

श का योग इस तरह (श्) और (श) होताहै जैसे प्रश्न प्रश्न प्रश्न॥

भाषा में द्वित्व अक्षर अर्थात् जब एकही वर्ण दोबार जुड़ाहो तो उस के पूर्व्वस्वर को गुरु अर्थात् ज़ोर से बोलते हैं जैसा कुत्ता, रस्सा, चक्की॥

भिन्न अक्षरों के योग में कहीं लघु और कहीं गुरु बोलते हैं—जैसे तुम्हारा, सबह॥

---

७ पाठ।

स्थान विचार॥

१५—मुखके जिस भागसे जिन वर्णोंका उच्चारण होताहै उसी भाग को उन वर्णों का **उच्चारणस्थान** कहते हैं॥

अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग कंठ से बोले जाते हैं इसीसे **कण्ठ्य** कहाते हैं॥

इ ई च छ ज झ ञ य श येतालु से बोलेजाते हैं और **तालव्य** कहाते हैं॥

ऋ ॠ टवर्ग र ष ये मूर्द्धा अर्थात् तालु से कुछ ऊपर जीभ लगाने से बोले जाते हैं और **मूर्द्धन्य** कहाते हैं॥

ऌ तवर्ग ल स इनका दन्त स्थान है और **दन्त्य** कहाते हैं॥

उ ऊ पवर्ग इनका ओष्ठ स्थान है और **ओष्ठ्य** कहाते हैं॥

ए ऐ कंठ और तालु से बोले जाते हैं और उनको **कण्ठतालव्य** कहते हैं॥

ओ औ कंठ और ओष्ठ से बोले जातेहैं और **कण्ठौष्ठ्य** कहाते हैं॥

व दांत और ओष्ठ से बोला जाता है और **दन्तोष्ठ्य** कहाता है ॥

ङ ञ ण न म ये अपने ? वर्ग के स्थान और नासिका से बोले जाते हैं और **अनुनासिक** कहाते हैं ॥

दूसरा अध्याय ॥

१ पाठ।

शब्द विचार ॥

१६——**शब्दविचार** वह है जिस्में शब्दों की जाति, साधन, व्युत्पत्ति और दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध का वर्णन हो ॥

१७——**शब्द** वह है जो कानसे सुनाई देवे वह दो तरह का होताहै **सार्थक** और **निरर्थक** व्याकरण में केवल **सार्थक** शब्दों का विचार किया जाता है ॥

शब्द दो प्रकार के होतेहैं—**सिद्ध** और **साधित** ॥

१८——**सिद्ध** वहहै जो दूसरे शब्दसे न बनाहो जैसा घोड़ा,बैल, बाप ॥

१९——**साधित** शब्द वह है जो दूसरे से बना हो जैसा शास्त्री विद्यार्थी ॥

शब्दों के आठ भेद हैं, **१ नाम २ सर्व्वनाम ३ बिशेषण ४ क्रियापद ५ क्रियाविशेषण ६ सम्बन्धयोगी ७ उभयान्वयी ८ उद्गारवाची** ॥

२०——पदार्थ मात्रकी संज्ञाको **नाम** कहतेहैं, जैसे घोड़ा, बैल, मनुष्य कान्हपुर, गङ्गा, क्रोध, खुसी इत्यादि ॥

२१——नाम को एक बार कहकर फिर उसकी जगह जो शब्द आता है उसे **सर्व्वनाम** कहते हैं, जैसा मोहन आया और वह बोला ॥

२२—— **विशेषण** उसे कहते हैं जो पदार्थ का गुण वा धर्म्मबतावे जैसा खुशबू, सुगन्ध, दो बालक, तेज़ चाकू, खट्टा नीबू, इत्यादि ॥

२३——**क्रिया** उसे कहते हैं जिसमें होना वा करना पायजावे, जैसा गया, जाता है, मारागया ॥

२४——क्रियाके गुण वा प्रकार बोधक शब्दों को **क्रियाविशेषण** कहते हैं जैसे जल्द जा, खूब लिखता है ॥

२५—**शब्दयोगी अव्यय** नाम के साथ आकर उसका सम्बन्ध दूसरे की तरफ़ बताता है, जैसा आगे, पीछे, ऊपर, नीचे ॥

२६—**उभयान्वयी अव्यय** वहहै जो दो शब्दों वा दो वाक्यों के बीच में आकर उनको जोड़े या तोड़े; जैसे, और, परंतु, लेकिन्, वा ॥

२७—**उद्गारवाचीअव्यय** वह हैं जिनसे मनका विकार जाना जाय; जैसा वाह ! वा, ! छः, ! धिक् !

२ पाठ।

नाम ॥

नाम तीन तरहकेहैं, १ **सामान्यनाम** २ **विशेषनाम** ३ **भाववाचकनाम** ॥

२८—**सामान्यनाम** वह है जिससे उस जाति समूहका कोईएक समझा जाय; जैसा घड़ा, मनुष्य, हाथी ॥

२९—**विशेषनाम** वह है जिससे केवल व्यक्तिमात्र का बोध हो; जैसे गङ्गा, लखनऊ, केदार, जाफ़र, ईरान ॥

३०—पदार्थका धर्म्म अर्थात् गुण वा कोई व्यापार जिससे पायाजाय उसे **भाववाचक नाम** कहते हैं; जैसे औदार्य्य, समझ, शोर, मार वृद्धत्व, चातुर्य ॥

नाम में **लिङ्ग वचन** और **कारक** होते हैं ॥

३ पाठ।

लिङ्ग विचार ॥

३१—**लिङ्ग** चिन्ह को कहते हैं जिससे नामका पुंस्त्व और स्त्रीत्व जाना जावे ॥

लिङ्ग दो हैं **पुंल्लिङ्ग** और **स्त्रीलिङ्ग** ॥

यह कौन नाम हैं बताओ=

लड़कपन, मूर्खता, रज़ाई, सुधाई, बढ़ई, कलई, लड़ाई, गाय, पोथी पेड़, दंड जुर्माना, काशी, खलभली, रोग, दर्द, कसाई, लोभ, हठ, प्रयाग, बोध, मंगल, बुध चैत्र, आनन्द, अथाई, बुढ़ापा, कथा, बात, सुख, दुःख, शोक, सन्ताप, ईर्षा, द्वेष भलाई, कञ्जूसी, विलियम, राजर्षि, दूलाहा खाट, राम, रहीम, करीम ॥

३२——जिस नाम से पुरुषत्व का बोधहो उसे **पुल्लिङ्ग** कहतेहैं; जैसा मनुष्य, घोड़ा, गाड़ा, हाथी, ऊंट ॥

३३——जिस नाम से स्त्रीत्वका बोधहो वह **स्त्रीलिङ्ग** है जैसा स्त्री घोड़ी, गाड़ी, हथिनी, ऊंटिनी ॥

(क) जिन शब्दों के अन्त में **ई** वा **त** होवे अक्सर स्त्रीलिङ्ग हैं परन्तु घी, दही, मोती, पानी, जी और हाथी को छोड़कर, जैसा कुरसी हवेली, टोपी, रात, बात ॥

(ख) जिस नाम के अन्त में **आवट** वा **आहट** प्रत्यय हो वह सदा स्त्री लिङ्ग है; जैसा सजावट, बनावट, घबराहट इत्यादि ॥

---

४ पाठ।

वचन का वर्णन ॥

३४—**वचन** संख्याको कहतेहैं, वे दोहैं; **एकवचन** और **बहुवचन** ॥

एक का बोध जिस नाम से हो उसे **एकवचन** कहते हैं; जैसा लड़का, टोपी ॥

एक से अधिक का बोध जिस नामसेहो वह **बहुवचन** है; यथा लड़के, टोपियां ॥

---

५ पाठ।

कारक ॥

३५——जिस नाम में क्रिया का सम्बन्ध हो उसे **कारक** कहते हैं

इन शब्दों का लिंग बताओ और जिनके जोड़े दूसरे लिंगमें होसकें वह भी कहो?

देव, दासी, लाठी. माली, तेली, घास, दरिद्र, राख, फूल, खाट, भाट, जाट, धोबी ओझा, खाभा. टाट, तालाब, चौबे, दुबे, रानी. नर, मर्द, औरत, भाई,बहिन मा चक्र, लट्ठा, ईंट, भीत, कील, रुपया, पशु, कलम, चमक, रज्ज, ग़म, दाल, तारा सखी, हिजड़ा, कुंजड़ा, ज़ोर, लाला, बाजा, पीड़ा, पड़ोसी, कपट, ख़बर, आज़माइश हद, काग़ज़, बालू, नाइन, नारी, नहर, मूंग, उड़द, राह, आवाज़, सौदा, भीख ॥

इनके वचन कहो जो एक वचन हों उनके बहु वचनका रूपकहो ?

गेहूं चना, यव, नमक, दौलत, खुशी, रुई, नींबू, आम, तेल, प्रजा, रय्यत, जेब, ढोल भैंसे, लोधे, भेद, रेत, वृक्ष, खेत, भेड़, मेढ़े, बोझा, खोज, शोक, लोग, गण, कण, मेट, क्रोध कष्ट, मूष, पेच, कथा, माथ, पीठ, नज़र, फल, बल, दूध, बेल, चोट, दीप, तिन, सेठ. पेट कोठे, जोड़े, पेड़े, काजल, खाने, कलिया, झाड़ू, राजा, दाढ़ी, काका, धेनु, वेलु, देवी ॥

छः कारकहैं १ कर्त्ता २ कर्म ३ करण ४ संप्रदान ५ अपादान ६ अधिकरण

३६—कर्त्ता वह है जो क्रिया करे; जैसा वह सोता है ॥

३७—क्रिया का फल जिस पर रहे उसे कर्म जानो जैसे बढ़ई लकड़ी को चीरता है ॥

३८—जिसके द्वारा क्रिया की जावे उसे करण कहते हैं;जैसे उसनेचाकू से कलम को काटा ॥

३९—जिसको कुछ दिया जावे या जिसके निमित्त कुछ कियाजावे उसे सम्प्रदान कहतेहैं जैसा ईश्वर भूखेको खाना और नंगेको कपड़ा देताहै॥

४०—जिससे वियोग किया जावे उसे अपादान कहतेहैं; जैसे कुए से जल भरता है ॥

४१—सम्बन्ध दो में रहता है एक कृतसम्बन्धी दूसरा सम्बन्धी ॥

कृतसम्बन्धी के आगे **का, की, के** लानेसे सम्बन्धीका सम्बन्धज़ाहिर करते हैं ॥ कृतसम्बन्धी सम्बन्धी का विशेषण होताहै, क्रिया से उसको कुछ ताल्लुक़ नहीं रहता इसीसे यह कारक नहीं है ॥

४२—अधिकरण आधार को कहते हैं; जैसा घड़ी ताक़में, किताबमेज़ पर, टोपी कील पै; ॥

सम्बोधन किसीको चिता कर सामने करनेको कहते हैं; उसकेबोधक अव्यय **हे, अरे, अय** नाम के पहिले लाते हैं जैसे हे राम, ॥

आकारान्त पुल्लिंग ॥

लड़काशब्द

	एकवचन	वहुवचन
कर्त्ता	लड़का	लड़के
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से	लड़कों से

अप्रधान कर्ता का चिन्ह **ने** आता है ॥

कर्मका चिन्ह **को** आता है ॥

करणका चिन्ह **से** है ॥

संप्रदानके चिन्ह **को, केलिये;** अपादान का चिन्ह**से** है ॥

संप्रदान	लड़के केलिये—को	लड़कोंकेलिये—को
अपादान	लड़के से	लड़कों से
संबंध	लड़के का—की—के	लड़कोंका—की—के
अधिकरण	लड़के में—पै—पर	लड़कों में—पै—पर
संबोधन	अयलड़के	

इसी तरह और शब्दोंके रूप जानो बोल चाल और अधिक पढ़ने व बड़े २ ग्रन्थों के देखने से जो अन्तर है मालूम होजायगा ॥

---

६ पाठ ।

सर्वनाम ॥

सर्वनामों के नामवत् लिङ्ग वचन होतेहैं परंतु लिङ्ग भेदसे रूपमेंकुछ भेद नहीं होता अर्थात् पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्गके लिये एकसाहीरूपहोताहै नामके अनुरोध से सर्वनामका लिङ्ग जाना जाता है ॥

सर्वनाम पांच प्रकार के हैं ॥

१ पुरुषवाचक २ दर्शक ३ संबंधी ४ प्रश्नार्थक ५ सामान्य ॥

मैं, तू, वह, ये पुरुषवाचक सर्वनाम हैं ॥

मैं यह बोलनेवाले को बताता है इसलिये प्रथम पुरुष कहते हैं ॥

तू यह जिससे बात कीजाती है उसको बताताहै; उसे द्वितीयपुरुष कहते हैं ॥

वह उक्त दोनोंको छोड़ तीसरे का बोध कराताहै; उसे तृतीयपुरुष कहते हैं ॥

एकवचन	बहु वचन
मैं	हम
तू	तुम
वह	वे

मैं को मुझ, मेरा तू को तुझ तेरा वह को उस	तुमको तुम्ह व को उन, उन्ह	कारक बनाने में आदेश होजातेहैं

अध्यापक को सब कारकों के रूप बताना चाहिये ॥

द्वितीय और तृतीय पुरुषवाचक सर्वनामोंको आदरार्थमें आप आदेश होजाता है ॥

यथार्थ बहुत्व बतानेको **आप**के आगे **लोग** लगा देतेहैं;जैसा आपलोग,

आपके आगे ने—ना—नी लगानेसे निजका बाचक होताहै; जैसा अपने घर में, अपना माल ॥

आपस यह परस्परबोधक है, जैसे आपसमें मेल चाहिये ॥

---

७ पाठ।

यह, वह, दर्शक हैं ॥ **यह** समीप की बस्तु को और **वह** दूरकी बस्तु को बताता है ॥

यह का बहुवचन **ये** और **वह** का **वे** होता है ॥

यह को **इस—इन—इन्ह** आदेश कारकरचना में होते हैं ॥

जो जौन और **सो तौन** सम्बन्धी सर्वनाम हैं **जिस जिन जिन्ह तिस तिन तिन्ह** आदेश कारकरचना में होते हैं ॥

कौन और **क्या** प्रश्नार्थक सर्वनाम हैं ॥

किस
किन } आदेश कौनके होतेहैं ॥
किन्ह

क्या को **काहे** आदेश होता है ॥

कोई, कुछ, आप, ये सामान्य सर्वनाम हैं **किसी, किसू,** आदेश हैं **कोई** और **कुछ** के ॥

एक दूसरा, दोनो कई, सब, कईएक, बाजे, बहुत, हर, फलाना, कैसाही, कितनाही यहभी सामान्य सर्वनाम हैं ॥

---

८ पाठ।

विशेषण ॥

विशेषणके भेद ये हैं १ गुणबाचक २ संख्यावाचक ३ क्रमबाचक आवृत्तिबाचक ४ ॥

४३—विशेष्य वह है जिसकी विशेषता (तारीफ़) विशेषण बतावे;जैसे **ग़रीबपरवर** हाकिम ॥

४४—गुणवाचक वह है जिससे केवल गुण पायाजाय,जैसे **साफ**पानी॥
४५—संख्यावाचक वह है जिससे संख्या बोधित हो जैसे **दो** घोड़े॥
४६—क्रमवाचक वह है जिससे क्रम साबित हो जैसे **दूसरा** घर॥
४७—आवृत्तिवाचक से दफ़ा और दर्जा मालूम होताहै जैसे **दो** दफ़ा **दो** बार, **दो** गुना॥

---

९ पाठ।

क्रियापद॥

४८—जिससे देह और मनके व्यापारका बोधहो वह **क्रियापद** है जैसा सोता है, जाता, मारा, पालता है॥

क्रिया धातुसे बनती है॥

४९—क्रिया का मूल अर्थात् व्यापारबोधक जो शुद्ध रूप है उसे **धातु** कहते हैं जैसा गा, सो, कर, बैठ, रो, धो॥ भाषामें न चिन्ह लगा कर धातु बताते हैं॥

धातु दो प्रकारकी है; एक **सकर्मक** दूसरी **अकर्मक**॥

जब क्रियाका फल दूसरे पदार्थमें हो तो वह **सकर्मक** है क्रिया का फलकर्त्ताहीमें रहे तो वह **अकर्मक** है॥

उदाहरण

अकर्मकक्रियापद	सकर्मकक्रियापद
बलदेव सोताहै	बिहारीखेतकोजोतताहै
कुत्ता भूंकता है	लक्ष्मीदत्तकिताबपढ़ताहै
रामदौड़ता है	मोहन घड़ी बनाताहै

सकर्मकअकर्मककीपहचान॥

जिस क्रियापदसे **क्या** और **किसको** ऐसे सवालसे जवाब मिलेतो वह क्रिया सकर्मक जानो, जैसा इस वाक्यमें, "वह देता है"क्या देताहै? और किसको देता है? खाना,और भूखे को ये उत्तर मिलते हैं इसलिये देता है सकर्मक क्रियापद है॥ जब प्रश्न न होसके तो अकर्मक जानो॥

क्रिया में लिङ्ग, वचन, पुरुष, और काल ज़रूर होते हैं॥

क्रिया के रूप लिङ्ग, वचन, आदि से प्रायः बदल जाते हैं॥

५०—जिस समय में क्रिया हुई हो उसे **काल** कहते हैं, और उसका बोध क्रिया के रूप से होता है॥

काल के तीन भेद हैं, वर्त्तमान, भूत और भविष्य॥

५१—विद्यमान अर्थात् जो चला जाताहै उसे **बर्त्तमानकाल** कहते हैं, जैसे वह बैठा है॥

५२—जो समय बर्त्तमानकालसे पहले बीतगया उसे **भूतकाल** कहते हैं; जैसे वह बैठा, बैठा था॥

५३—होनेवाली क्रियाके समय को **भविष्यत्काल** कहते हैं; जैसा बैठेगा, सोवेगा, होवेगा, होगा॥

उदाहरण

वर्त्तमान काल॥

मैं हूं	तू है	वह है	एकवचन
हम हैं	तुम हो	वे हैं	बहुवचन

भूतकाल

मैं था	तू था	वह था	पुल्लिंग एकवचन
हम थे	तुम थे	वे थे	तथा बहुवचन
मैं थी	तू थी	वह थी	स्त्रीलिंग एकवचन
हम थीं	तुम थीं	वे थीं	तथा बहुवचन

अकर्मक हो धातु

वर्त्तमानकाल॥

पुल्लिंग

मैं होऊं—हों	हम हों
तू हो	तुम हो
वह हो	वे हों

दूसरा रूप

पु—मैं होता हूं	हम होते हैं
स्त्री—मैं होती हूं	हम होती हैं

भूतकाल

पु—मैं होता	हम होते

स्त्री—मैं होती	हम होतीं

दूसरा रूप

पु०—मैं होता था	हम होते थे
स्त्री०—मैं होती थी	हम होती थीं

तीसरा रूप

पु०—मैं हुआ	हम हुए
स्त्री०—मैं हुई	हम हुईं

चौथा रूप

पु०—मैं हुआ था	हम हुए थे
स्त्री०—मैं हुई थी	हम हुई थीं

भविष्यत्काल

पु०—मैं होऊंगा	हम होवेंगे-होंगे
स्त्री०—मैं होऊंगी	हम होवेंगी-होंगी

खाना सकर्मक

वर्तमान काल

ए०—वचन	ब० वचन
पु०, स्त्री० } मैं खाऊं	हम खाएं-खावें

दूसरा रूप

पु०—मैं खाता हूं	हम खाते हैं
स्त्री०—मैं खाती हूं	हम खाती हैं

भूतकाल

पु०—मैं खाता	हम खाते
स्त्री०—मैं खाती	हम खातीं

दूसरा रूप

पु०—मैं खाता था	हम खाते थे
स्त्री०—मैं खाती थी	हम खाती थीं

तीसरा रूप

मैंने खाया	हमने खाया

चौथा रूप

मैंने खाया था	हमने खाया था

भविष्यत्काल

पु०—मैंखाऊंगा	हम खावेंगे—खाएंगे
स्त्री० मैं खाऊंगी	हम खावेंगी—खाएंगी

---

१० पाठ।

अव्यय ॥

५४ जिस शब्दको विभक्त्यादि कार्य्य नहीं होताहै उसे अविभक्तिक अथवा **अव्यय** कहतेहैं इसका रूप सदा वैसाही बना रहता है लिङ्ग,वचन और कारक से कुछ अन्तर नहीं होता, जैसे,तब ऊपर और हा ॥

अव्यय के चार भेद हैं; क्रियाविशेषण, उभयान्वयी, शब्दयोगी, उद्गारवाची वा विस्मयादिबोधक ॥

क्रियाविशेषण॥

५५ जिसशब्दसे क्रियाके गुण वा प्रकार काबोधहो उसे**क्रियाविशेषण** कहते हैं जैसे **धीरे** चलता है, **बहुत** बकता है ॥

क्रियाविशेषण कई तरहकेहैं—कालवाचक,यथा, अब,कब,जब,तब,सदा हमेशह, रोज २, दिनरात, प्रतिदिन, आजकल—परसों—नरसों—हररोज, बारम्बार, फिर,तुरन्त--एकदा ॥

स्थलवाचक जैसे, यहां, वहां, जहां—तहां कहां इधर, उधर, जिधर तिधर, किधर, आसपास, आगे, पीछे—निकट नजदीक—पार—सर्बच—परे।

प्रकारार्थक, यों, वों,—क्यों—ज्यों—त्यों—ऐसा—वैसा—कैसा—जैसा—तैसा यथा ॥

निषेधवाचक—न—नहीं ॥

विधि—हां—जी ॥

निश्चयवाचक—अभी—कभी—तभी—ठीक २—बेशक ॥

परिमाणवाचक इतना—उतना—कितना—जितना—तितना ॥

शब्दयोगी॥

अव्यय

शब्दयोगी अव्यय यह हैं,जैसा मर्दके **आगे**,लड़के के **पास**, उसके **समक्ष**,उस **बिना** बालगोपाल **समेत**—गोपी **सहित** ॥

आगे—अंदर—भीतर—ऊपर—बाहर—बराबर—बदल—बदले—समीप—

बीच—पास—पीछे—तले—सामने—गिर्द—नज़दीक—नीचे—पार—बाद—बिन बिना—साथ—लिये—मारे—समक्ष ॥

उभयान्वयीअव्यय ॥

केदार **और** शङ्कर आये **पर** काली न आया ॥

उभयान्वयी पांच तरह के हैं—

१ मिलानेवाले वा समूह बतानेवाले १ जिनको समुच्चयबाचक कहतेहैं जैसे और, व, भी ॥

कारणबाचक—क्योंकि

पक्षान्तरबोधक—पर—परन्तु—किंतु—वा—या—अथवा—मगर—नहीं तो—चाहे—ख़्वाह ॥

संकेतार्थक—यदि—जो—तो—तथापि—तोभी ॥

स्वरूपबोधक कि—अर्थात्—यानी ॥

बिस्मयादि बोधक अव्यय ॥

६—जो कहनेवालेका दुःख, हर्ष, धिक्कार, धन्यता आदि मनका भाव बतावे वह केवलप्रयोगी वा उद्गारबाची अव्यय है ॥

दुःख और धिक्कारबोधक—बापरे—हायहाय—छः—अरेरे—ऊः—हाहा धिक्—दूरदूर—चुप—रामराम—शिवशिव—छीछी ॥

हर्ष और धन्यताबोधक—जयजय—शाबाश—वाहवा—धन्यधन्य—वाह वाह ॥ सम्मुखीकरणबोधक—अय—ओ—अरे—हे—अबे ॥

तीसरा अध्याय ॥

---

१ पाठ ।

वाक्यविचार ॥

५७—**वाक्यबिचार** सेशब्दोंकी योजना अर्थात् किस जगह कौनशब्द किस रीतिसे रखना चाहिये और उनका परस्पर संबंध जाना जाता है ॥

५८—शब्दोंकीसुसंबद्ध व्यवस्था जो बात पूरी करे उसे **वाक्य** कहते हैं जैसा रामाधीन सोता है—ज्वाला बहुत भूलता है ॥

वाक्य पांच प्रकार के होते हैं; कथनात्मक, प्रश्नार्थक, अज्ञार्थक विस्मयादि बोधक, इच्छा प्रबोधक ॥

उदाहरण॥

१	श्रीनाथ रोटी करता है;	१ कथनात्मक
	दीनअली क्या करता है ?	२ प्रश्नार्थक
३	देवी पानी ला;	३ आज्ञार्थक
४	हा ! कैसा शोक हुआ है,	४ विस्मयादिबोधक
५	पुत्र होय	५ इच्छाप्रबोधक

वाक्यमें उद्देश्य और विधेय अवश्य हैं;

५८ जिसके विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं; उद्देश्य के विषयमें जो बात कही जाय उसे विधेय कहते हैं ॥

जैसा सन्तोषी सदैव सुखको पाता है ॥

उद्देश्य	विधेय	विधेयार्थपूरक	विधेयार्थवर्धक
सन्तोषी	पाताहै	सुखको	सदैव

६ हर एक वाक्यमें पहिले कर्त्ता फिर कर्म आदि और क्रिया सबके पीछे आती है, पर यह नियम अवश्य नहीं है ॥

व्याकरण से वाक्य का पदच्छेद ॥

हमको त्याग अकेलो धायो । जहां गयो तहां खोज न पायो ॥

हमको दर्शक सर्वनाम, पुल्लिङ्ग वहुवचन, कर्मकारक क्योंकिको चिन्ह है ॥

त्याग धातु साधित अव्यय ॥

अकेलो प्रकारार्थक क्रिया विशेषण ॥

धायो धाना धातु अकर्मक भूतकाल, पुल्लिङ्ग, एकवचन, कर्त्ता वह यह सर्वनाम ऊपर से ॥

जहां स्थलबाचक क्रिया बिशेषण ॥

गयो जानाधातु अकर्मक भूतकाल पुल्लिङ्ग एकवचन;कर्त्ता वह सर्वनाम ऊपर से ॥

तहां स्थलबाचक क्रिया बिशेषण ॥

खोज धातु साधित भाव बाचक नाम—पुल्लिङ्ग एक वचन कर्म कारक ॥

न	निषेध बाचक अव्यय ॥
पायो	पा सकर्मक धातु भूतकाल पुल्लिङ्ग एकवचन ॥

श्रीशुकदेवजी बोले, कि महाराज! जो श्रीकृष्णचन्द्र दल समेतजरासन्ध को जीत, कालयवन को मार, ब्रजको तज, द्वारका में जाय बसे सो मैं सब कथा कहता हूं ॥

श्री	यह आदरार्थ में नामके पूर्व लगाते हैं और पूरा शब्द श्रीयुत है जो शुकदेव का विशेषण है ॥
शुकदेवजी	(जी यह सन्मान अर्थ में लाते हैं) वि० नाम पुल्लिङ्ग एक वचन कर्त्ता कारक बोले क्रियाका ॥
बोले	बोले अक० क्रिया—भूतकाल—पु० ब० वचन यहआदरार्थमें बहुवचन है क्योंकि शुकदेवजी कर्त्ता एकवचन है ॥
कि	अव्यय स्वरूपबोधक ॥
महाराज	सामान्यनाम पु० एक व० सम्बोन्धन ॥
जो	सम्बन्धी सर्वनाम ॥
श्रीकृष्णचन्द्र	विशेषनाम पु० एकव० कर्त्ता कारक जायबसे—क्रियाका ॥
दल	सा० नाम पुल्लिङ्ग एकव० समेत शब्द योगीअव्ययके योगसे॥
समेत	शब्दयोगीअव्यय ॥
जरासिंधु	विशेष नाम पु० एकवचन कर्म कारक कोचिन्हहै कर्म्मका ॥
जीत	धातुसाधित अव्यय ॥
कालयवन	बि० नाम पु० एकव० कर्म; को चिन्ह ॥
मार	धा० सा० अव्यय ॥
ब्रज	बि० नाम पु० एक ब० कर्म को चिन्ह ॥
तज	धा० सा० अव्यय ॥
द्वारका	बि० नाम पु० एक व० अधिकरण में चिन्ह ॥
में	सप्तमी विभक्ति प्रत्यय ॥
जायबसे	संयुक्त अक० क्रियापद पु० बहुव० (आदरार्थ में)भूतकाल कर्त्ता श्रीकृष्णचन्द्र ॥
सो	सं० बाचक सर्वनाम ॥
मैं	पुरुषबाचक सर्वनाम पु० एकव० प्रथम पुरुष कर्त्ता कहताहूं क्रिया का ॥

सब	बिशेषण कथा का ॥
कथा	सा० नाम स्त्रीलिङ्ग एकवचन कर्म कहताहूं क्रिया का ॥
कहताहूं	सकर्मक क्रियापद कर्म कथा पु०एकव० प्रथमपुरुष वर्त्तमान काल कर्त्ता मैं सर्वनाम का ॥

इति